

— प्रति dass.: प्रति वा स्तोमैरीकृते वसिष्ठाः RV. 7, 76, 6.
 इ f. = इः अग्निमस्तोष्युग्मिममग्निमीका यन्त्यै RV. 8, 39, 1.
 इडा (von इ) f. Lob H. 269. HAL. im ÇKDr.
 इड्य, इड्य (wie eben) adj. anzurufen, anzuflehen, zu preisen: ई-
 ड्यो मेहा अर्थाय नोवसे RV. 1, 146, 5. 79, 5. ईड्यो नमस्यः 3, 27, 13, 5,
 14, 5. 7, 2, 3. 9, 4. 9, 3, 3. 10, 46, 9. अग्निरीड्यो गिरा 118, 3. VS. 28, 26.
 ÇAT. Br. 1, 4, 2, 5. 5, 2, 3.
 ईड्य (wie eben) adj. dass. P. 6, 1, 244. अग्निः पूर्वभिर्भयिभिरीड्यो नूनै-
 रूत RV. 1, 1, 2. 12, 3. 188, 3. 2, 1, 4. स मात्रोर्भवत्पुत्र ईड्यः 3, 2, 2. 5, 6, 9.
 54, 1. 4, 7, 1. स वृत्रहृत्ये कृत्यः स ईड्यः 24, 2. 6, 13, 8. AV. 2, 2, 1. चर्कृत्य
 ईड्यो वन्द्यश्च 6, 98, 1. 110, 1. ÇAT. Br. 1, 4, 4, 38. ईड्या देवा ब्राह्मणाः सप-
 र्थेया यत्तैत्रेयान्प्रोपात्यन्वाकार्येण सपर्येयान् KAUC. 6. ÇVETĀÇV. Up. 4,
 11. MBH. 3, 15641. BHAG. 11, 44. RAGH. 5, 34.
 ईमत् adj. von 2. ईम् VOP. 21, 14.
 इति f. 1) Plage, Noth AK. 3, 4, 71. H. 126. 60. an. 2, 159. MED. t. 4.
 अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषिकाः खगाः । प्रत्यासन्नाश्च राजानः पठेत ई-
 तयः स्मृताः ॥ PARĀÇARA im ÇKDr. (u. अतिवृष्टिः). MBH. 3, 11258. इत्यस्ते
 (so ist zu lesen) प्रशाम्यन्तु SUÇR. 1, 17, 19. प्रजा निरीतयः RAGH. 1, 63. नि-
 रीतिका दिशो दृष्ट्वा R. 1, 32, 24. ansteckende Krankheit VJUP. 221. —
 2) = टिम्ब Schlägerei MED. — 3) ein Aufenthalt ausser Landes (प्रवास)
 AK. H. an. MED.
 ईदृक्ता (von ईदृप्) f. Qualität: विज्ञोर्वास्यानवधारणीयमीदृक्तया त्र-
 पमितयता वा RAGH. 13, 5. मां तु न कश्चिद्विदुष्य ईदृक्तया जानाति DAÇAK.
 98, 9.
 ईदृत् (इद् + दृत् von दृप्) adj. von diesem Aussehen, derartig, so le-
 schaffen, ein solcher SIDDH. K. 62, a, 12. VOP. 26, 33, 84. ईदृत्तास एताद-
 तास ऊ पु षाः सदृत्तासः प्रतिदृत्तास एतेन VS. 17, 84 (vgl. 81). ईदृत्तराज-
 कार्याणि भवेयुः KATHĀS. 13, 103. — Vgl. die fgg. Ww.
 ईदृप् (इद् + दृप्) adj. (nom. ईदृक्, ved. ईदृड् P. 7, 1, 83) dass. P. 6, 3,
 90. VOP. 26, 83, 84. ईदृङ्गान्यादृङ्गं VS. 17, 81. ईदृङ्गो ऽक्विभेदीदृङ्गे राष्ट्रं वि-
 पर्यावर्तयतीति TS. 2, 5, 4, 1. स तु रसो यस्येद्विष्णुश्च ÇAT. Br. 11, 5, 4,
 18. BHAG. 11, 49. ÇĀK. 38. PAÑKĀT. 100, 6. 109, 11. 129, 12. कदाचिद्गवत्तं
 प्रति तया नैतदभिकृतिमीदृक् 83, 21. रत्नानीदृशि KATHĀS. 25, 176. 26,
 235. Im Veda subst. solche Lage, solcher Anlass; häufig in der Re-
 densart ता नो मृकता ईदृशो RV. 1, 17, 1. 4, 37, 1. 6, 60, 5. AV. 7, 109, 1. 7.
 तमेकस्य वृत्रहृत्विता द्वेषोरसि । उतेदृशे यथा वयम् RV. 6, 43, 5. यूयमप्रा
 मरुत ईदृशे स्य AV. 3, 1, 2. (यदि) ईदृगारं wenn ich in solche Lage gera-
 then bin 4, 27, 6.
 ईदृश (इद् + दृश) adj. f. ई dass. P. 6, 3, 90. VOP. 26, 83, 84. ÇAT. Br. 14,
 6, 4, 2. KHĀND. Up. 4, 14, 2. M. 1, 45. 4, 134. 199. N. 3, 8. 13, 45. 19, 15.
 BHAG. 6, 42. DAÇ. 2, 38. R. 1, 2, 44. 7, 16. 73, 36. 3, 14, 9. 35, 67. SUÇR. 1,
 230, 18. ÇĀK. 81, 83. 81, 24. PAÑKĀT. III, 73. 206, 6. HIT. 46, 2. KATHĀS. 4,
 107. VID. 7. H. 133. 269. fem. R. 2, 85, 2. ÇĀK. 60, 12. PAÑKĀT. 173, 3. HIT.
 15, 18. KATHĀS. 21, 42. SĀU. D. 25, 19.
 ईदृशक (von ईदृश) adj. dass.: एवमीदृशके स्वप्नं द्रव्यसि तम् MBH. 2,
 1644. एतदीदृशकम् 3, 8687.
 ईत्, ईत्ति binden VOP. zu DhĀTUP. 3, 25. — Vgl. अत्, अन्द्.
 ईप् s. u. आप् desid.

ईप्ता (von ईप्) f. Verlangen, Begehren, Wunsch H. c. 103. MBH. 14,
 1025. पथेप्सया 3, 116. gewöhnlich mit dem obj. compon. 11339. SĀV.
 1, 11. R. 2, 96, 51.
 ईप्सु (wie eben) adj. zu erlangen strebend, verlangend nach, begeh-
 rend; mit dem acc.: अस्त्राणीप्सुः ARĀ. 4, 25. कत्याणामीप्सुभिः M. 3, 35.
 MBH. 1, 7420. R. 2, 68, 20. RAGH. 5, 69. mit dem inf. MBH. 3, 8533. mit
 dem obj. compon.: संवत्सरेप्सु KĀTJ. Çr. 5, 11, 15. M. 2, 61. 10, 127. BHAG.
 18, 24. HĪP. 2, 3. MBH. 14, 450. R. 1, 16, 18. 70, 33 (पुत्रेप्सु fem.). 2, 102,
 9. 3, 32, 17. भवतां च विज्ञानामि सर्वलोकहितेप्सुताम् MĪH. 1, 6857. ई-
 प्सुयत्त ein bes. Soma-Opfer KĀTJ. Çr. 22, 5, 8. — Vgl. अर्थेप्सु.
 ईम् (von 2. इ) gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. nachgesetzte enklit. Verstär-
 kungspartikel; besonders häufig nach kurzen am Satzanfange stehen-
 den Wörtern, nach dem Relativ, der Conjunction यद्, nach सः, तम्,
 ताः, कः u. s. w., nach Präpositionen und einigen Partikeln wie आत्,
 उत्, अथ und andere. चयत् ईर्मयो अग्रशस्तान् RV. 1, 167, 8. सोमैभिरी
 पृषता भोवामिन्द्रम् 2, 14, 10. यस्मादिन्द्रादृक्तः किं चनेमूते 16, 2. उरुध्य-
 तोमहेसः 26, 4. वि यद्वा अत्रयं नाव ई यथा 5, 54, 4. प्रातिं न ई सुरभौषि
 व्यत्तु 7, 1, 18. यदोमेनो उणतो अयवर्षति 7, 103, 1. 1, 79, 3. 87, 5. 122, 9.
 2, 5, 3. 3, 36, 6. य ईम् 4, 164, 7. 10. 16. 32. य ई भवत्याजयः 7, 32, 17. स ई
 वृषाजानयताम् गर्भम् 2, 33, 13. 1, 144, 5. 4, 7, 5. 6, 47, 15. 7, 56, 1. VS. 23,
 55. 27, 15. 33, 60. Abfall des Auslauts findet nach RV. PRĀT. 4, 36 statt
 in folgenden Stellen: यमी गर्भम् RV. 9, 102, 6. तमी मूर्त्ति 107, 17. ए रिं-
 षत्ति 71, 6. समी सखायः 43, 4. समी रयम् 71, 5. समी गावः 72, 6. समी वृ-
 त्स्म 104, 2. समी पृथ्यते 1, 103, 1. समी विव्याच 3, 36, 8. अग्धमी पुनः 1,
 140, 2. — Nach NAIGH. 1, 12 ein उदकनामन्.
 ईयचत्सु adj. dessen Auge umherwandert: आ यद्दामीयचत्सा मित्र वयं
 च सूरयः । व्यचिष्ठे ब्रह्मपाट्ये यतेमहि स्वराब्जे RV. 5, 66, 6. — Zusam-
 mengesetzt aus ईय (adj. von 3. इ im intens.) + च०.
 ईयिक्त्सु s. u. 3. इ.
 ईर, ईरते (NAIGH. 2, 14), ईरते (ईरते s. — संप्र); imperf. 3. sg. und pl.
 ऐरते; partic. ईराण, ईरा; DhĀTUP. 24, 8. 1) sich in Bewegung setzen, sich
 erheben, hervorgehen; erstehen; ausgehen (vom Schall): इप्सा मधुमत्त ई-
 रते RV. 5, 63, 4. आदस्य ते धसपत्त ईरते 1, 140, 5. मत्सरासः प्रसुर्यः साक-
 मीरते 9, 69, 6. रुशदीर्ते पयो गोः 91, 3. अस्मे वाजास ईरताम् 4, 8, 7. गिर
 स्तोमास ईरते 8, 43, 1. 44, 25. 1, 32, 1. वायुप्रच्युता दिवो वृष्टिरीरते TS. 5,
 1, 5, 1. ÇAT. Br. 14, 2, 3. — 2) sich auf und davon machen: मृगादृश्या
 इवेरते AV. 19, 38, 2. — 3) trans. in Bewegung setzen; erheben, anheben:
 यत्रे द्वापयश्चास ईरते घृतं वाः RV. 10, 99, 4. य ईवते ब्रह्मणे गातुगैरते 4, 4,
 6. — caus. ईरयति (DhĀTUP. 34, 5) und ०ते. Die als 3te pl. perf. geltende
 Form ऐरिरे, welche vom Pa da pāḥa und den Commentatoren (schon im
 Nir. 4, 23) sowie nach der Accentuirung des Textes in आ + ईरिरे zer-
 legt wird, scheint eigentl. dem einfachen verbum anzugehören (s. — नि)
 und ist, wie die Bedeutung zeigt, zum Causalstamm zu ziehen. Dieselbe
 ist übrigens nach der hergebrachten Ordnung unter आ gestellt. 1) in
 Bewegung setzen, schleudern; erregen; hervorgehen —, erstehen lassen,
 in's Leben rufen: अयः समुद्रमैरयत् RV. 8, 6, 13. अशोत्रमिगीरय 9, 97, 14.
 56. पदस्य प्रुममैरयः 2, 17, 3. 9, 76, 2. देवं देवं राधमे चोदयः न्यस्मद्रव्यमनू-
 ता ईरयन्ती 7, 79, 5. 1, 113, 12. 3, 61, 2. पन्थानो येषिर्चिश्चमैरयः AV. 7, 33,